



श्री सम्मैतशिखरजी पट्ट के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से एवं मातृश्री गवरीदेवी उकचंदजी हिमताजी हिराणी के दिव्यारीष से पुत्र-पुत्रवधू : रमेशकुमार-मंजुदेवी
पौत्र-पौत्रवधू : सुनीलकुमार-शिल्पादेवी, रविकिरणकुमार-मनीषादेवी
पड़पोता-पड़पोती : दिव्यांश, अरमान, जिनाया
वेढा-पोता-पड़पोता शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : हिराणी फाउन्डेशन, चेन्नई



श्री गिरनारजी पट्ट के लाभार्थी

मातृश्री पानीदेवी हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुया के दिव्यारीष से शा. मदनलाल-संगीतादेवी, जयंतीलाल-विमलादेवी,
भेरुलाल-मंजुलादेवी, गौतमकुमार-संगीतादेवी,
विक्रम-अरुणा, निखिल-स्नेहा, गौरव-विनीशा, यश-पूजा, पर्व
वेढा-पोता शा. हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुया परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मास्टर ग्रुप, चेन्नई



भगवान के भण्डार के लाभार्थी

पिताश्री मंगलचंदजी पाबुदेवी कुन्दनमलजी हिराणी के दिव्यारीष से एवं मातृश्री फैसीदेवी मंगलचंदजी के आशीर्वाद से पुत्र-पुत्रवधू : दिनेशकुमार-चंद्रादेवी, महावीरकुमार-मंजुदेवी, गजराज-मीनादेवी
पौत्र-पौत्रवधू : मौंटूकुमार-भव्या, रिषभकुमार-वैशाली, निलेश, धुवराज • पौत्री : अर्पिता, रिशिता, रिधिमा
वेढा-पोता-पड़पोता शा. मंगलचंदजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्रीमती फैसीदेवी मंगलचंदजी हिराणी, चेन्नई - मुंबई



प्रतिष्ठा याने...

अंजनशलाका किये हुए परमात्मा का
जिन मंदिर में एक ही स्थान पर
हमेशा के लिए स्थिरीकरण...
चौंतीस अतिशयों से मनोज्ञ एवं
पैंतीस गुणयुक्त वाणी से सुशोभित
अरिहंत की भक्ति द्वारा...
तन के आरोग्य का समीकरण...
मन की अशांति का दूरीकरण...
धन-दौलत की लालसा का निराकरण...
परमात्मा की प्रतिष्ठा
सर्व विघ्नों का नाश करती है...
सर्वमंगलों का सर्जन करती है...
सर्व दोषों का विसर्जन करती है...
अतः प्रभुजी की जिन मंदिर में प्रतिष्ठा
भक्तों को अपूर्व परमानन्द अर्पण करती है...
यदि प्रभु-प्रतिमा नीतियुक्त धन से निर्मित हो...
यदि शासनप्रभावक निष्ठ सूरिदेव का सुयोग हो...
यदि प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजकों
एवं दानवीर उदार हो...
यदि संघ के कार्यकर्ता
नम्र तथा सेवाभावी हो...
तो... तो... तो...
इस धरती-तल पर
स्वर्ग सुख का अवतरण होगा...